BA III Organisational Psychology

Q. मूल्य की परिभाषा दिजिए। इसे कैसे प्राप्त किया जा सकता है?

Ans:- प्रत्येक समाज कुछ आदर्शों पर टिका होता है। सामाजिक जीवन के लिए भी आदर्शों की आवश्यकता होती है क्योंकि आदर्शों के बिना समाज की प्रगति व परिवर्तन की दिशा निर्धारित नहीं हो पाती है, ये आदर्श बताते है कि हमारी मंजिल क्या है। वास्तव कुछ आदर्शों को अपने सामने रखकर ही समाज के सदस्य क्रियाशील होते हैं। यह देखा जाता है कि सामाजिक अन्तः क्रिया के दौरान समाज या सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों के प्रति समाज के सदस्यों की एक विशेष दृष्टिकोण पनप जाता है। इन दृष्टिकोण के आधार पर ही हम इस बात की सामाजिक माप करते हैं कि अमुक वस्तु या सामाजिक घटना अच्छी है या बुरी, उचित है या अनुचित, समाज के लिए महत्वपूर्ण है या व्यर्थ।

रेबर तथा रेबर के अनुसार- "मूल्य एक अमूर्त तथा सामान्य नियम है जो किसी विशेष संस्कृति या समाज में व्यवहार प्रतिरूपों से संबंधित होता है और उस उस संस्कृति या समाज के सदस्य समाजीकरण प्रक्रिया के द्वारा उच्च सम्मान देते हैं।

रॉबिन्स के अनुसार- मूल्यों का तात्पर्य मूल धारणाओं से है कि एक विशिष्ट आचरण - संहिता अस्तित्व के अन्य स्थिति है, जिसको व्यक्तिगत या सामाजिक रूप

से विपरित आचरण - संहिता अथवा अस्तित्व के लक्ष्य से बेहतर माना जाता है

मूल्य के स्रोत -

(1) संस्कृति - मूल्यों की अथवा मूल्य तंत्रों का एक प्रमुख स्रोत भारतीय संस्कृति में शाँति सहयोग, मेल - मिलाप, समानता तथा प्रजातँत्र आदि सामाजिक मूल्य है

(2) प्राथमिक समाजीकरण - मूल्यों अथवा मूल्य तँत्रो के विकास पर प्राथमिक समाजीकरण का भी गहरा प्रभाव पड़ा है बच्चे अपने माता पिता से नाना प्रकार के मूल्यों को अर्जित करते है माता - पिता बच्चों के लिए मॉडल का काम करते है

Dr. Randhir Kumar
Dept of Psychology
Subject - Orgainational Psychology
Papper - VI
U.R. Collage Rosera Samastipur
9570435959, 9431852588

Scanned by TapScanner